

CHAPTER तैंतालीस

कृष्ण द्वारा कुवल्यापीड हाथी का वध

इस अध्याय में बतलाया गया है कि भगवान् कृष्ण ने किस तरह राजसी हाथी कुवल्यापीड को मारा, किस तरह कृष्ण तथा बलराम कुशती के अखाड़े में घुसे और कृष्ण ने चाणूर नामक मल्ल से क्या कहा।

प्रातःकालीन कर्म समाप्त करने के बाद कृष्ण तथा बलराम ने दंगल (कुशती) शुरू होने का नगाड़ा सुना और वे इस उत्सव को देखने गये। अखाड़े के द्वार पर उन्हें कुवल्यापीड नामक एक हाथी मिला जिसने अपने महावत के इशारे पर कृष्ण पर आक्रमण कर दिया। उस बलशाली हाथी ने कृष्ण को अपनी सूँड़ में लपेट लिया किन्तु कृष्ण उस पशु की दृष्टि से ओझल होकर उसके पाँवों के बीच में छुप गये। कृष्ण को न देख सकने के कारण क्रुद्ध होकर उस पशु ने अपनी घ्राण-शक्ति से उन्हें ढूँढ़ निकाला और पकड़ लिया किन्तु भगवान् ने अपने को ढीला छोड़ दिया। इस तरह कृष्ण कुवल्यापीड को तंग करते रहे और सताते रहे और अन्त में उसका ही एक दाँत निकाल कर इससे उसे तथा उसके महावत को पीट-पीट कर मार डाला।

जब कृष्ण हाथी के रक्त से सने और उसका एक दाँत अपने कंधे पर हथियार की तरह धारण किये हुए अखाड़े में प्रविष्ट हुए तो वे अभूतपूर्व सुन्दर लग रहे थे। वहाँ पर विभिन्न वर्गों के लोगों ने अपने अपने विशिष्ट सम्बन्ध के अनुसार उन्हें विभिन्न प्रकार से देखा।

जब कंस ने सुना कि कृष्ण तथा बलराम ने कुवल्यापीड का कैसे वध कर दिया है, तो वह समझ गया कि वे दोनों अजेय हैं अतः वह चिन्ता से घिर गया। किन्तु दर्शकगण एक-दूसरे से भगवान् की अद्भुत लीलाओं का उल्लेख करते हुए परम प्रसन्न हुए। लोगों ने कहा कि कृष्ण तथा बलराम अवश्य ही भगवान् नारायण के दो अंश हैं, जो वसुदेव के घर में अवतरित हुए हैं।

तब चाणूर मैदान में उतरा और उसने कृष्ण तथा बलराम को कुशती के लिए यह कहकर ललकारा कि राजा कंस इस प्रतियोगिता को देखना चाहते हैं। इस पर कृष्ण बोले, “यद्यपि हम केवल जंगलवासी घुमकड़ लोग हैं फिर भी राजा की प्रजा हैं अतः हम कुशती-प्रदर्शन द्वारा उनको प्रसन्न करने से पीछे नहीं रहेंगे।” ज्योंही चाणूर ने यह बात सुनी त्योंही उसने प्रस्ताव रखा कि कृष्ण उससे लड़ें और बलराम मुष्टिक से।

श्रीशुक उवाच

अथ कृष्णश्च रामश्च कृतशौचौ परन्तप ।

मल्लदुन्दुभिनिर्घोषं श्रुत्वा द्रष्टुमुपेतुः ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—श्रीशुकदेव गोस्वामी ने कहा; अथ—इसके बाद; कृष्णः—कृष्ण; च—तथा; रामः—बलराम; च—भी; कृत—पूरा करके, निवृत्त; शौचौ—शौच कर्म; परम्-तप—हे शत्रुओं को दण्ड देने वाले; मल्ल—कुशती की; दुन्दुभि—नगाड़े की; निर्घोषम्—ध्वनि; श्रुत्वा—सुनकर; द्रष्टुम्—देखने के लिए; उपेतुः—पास पहुँचे।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : हे परन्तप, नित्य शौच कर्मों से निवृत्त होकर जब कृष्ण तथा बलराम ने अखाड़े (रंगशाला) में बजने वाले नगाड़े की ध्वनि सुनी तो वे वहाँ यह देखने गये कि हो क्या रहा है।

तात्पर्य : श्रील श्रीधर गोस्वामी ने कृतशौचौ शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है, “कृष्ण तथा बलराम ने दो दिन पूर्व शुद्धि की थी और अपने अपराध से मुक्ति पाई थी (वीरतापूर्ण कार्य करने से) अतः उन्होंने तर्क किया, ‘यद्यपि हमने धनुष भंग द्वारा तथा अन्य साहसिक कार्यों से अपनी शक्ति का परिचय दे दिया है फिर भी हमारे माता-पिता बन्दीगृह से मुक्त नहीं हो पाये। कंस पुनः उन्हें मारने का प्रयत्न कर रहा है। अतः भले ही वह हमारा मामा क्यों न हो, उसका वध कर देना हमारे लिए अनुचित न होगा।’ उन्होंने इस प्रकार के तर्क द्वारा अपनी निरपराधिता व्यक्त की।”

रङ्गद्वारं समासाद्य तस्मिन्नागमवस्थितम् ।

अपश्यत्कुवल्यापीडं कृष्णोऽम्बष्ठप्रचोदितम् ॥ २ ॥

शब्दार्थ

रङ्ग—अखाड़े के; द्वारम्—द्वार पर; समासाद्य—पहुँचकर; तस्मिन्—उस स्थान पर; नागम्—हाथी को; अवस्थितम्—खड़ा; अपश्यत्—देखा; कुवल्यापीडम्—कुवल्यापीड नामक; कृष्णः—कृष्ण ने; अम्बष्ठ—महावत द्वारा; प्रचोदितम्—प्रेरित।

जब भगवान् कृष्ण अखाड़े के प्रवेशद्वार पर पहुँचे तो उन्होंने देखा कि कुवल्यापीड नामक हाथी अपने महावत की उत्प्रेरणा से उनका रास्ता रोक रहा है।

तात्पर्य : महावत ने अखाड़े में कृष्ण के प्रवेश को रोक कर अपना दुर्भावनापूर्ण मनोभाव व्यक्त किया।

बद्ध्वा परिकरं शौरिः समुह्य कुटिलालकान् ।

उवाच हस्तिपं वाचा मेघनादगभीरया ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

बद्ध्वा—बाँधकर; परिकरम्—फेंटा; शौरिः—कृष्ण ने; समुह्य—समेट कर; कुटिल—घुँघराले; अलकान्—बालों को; उवाच—कहा; हस्ति-पम्—महावत से; वाचा—शब्दों से; मेघ—बादल जैसे; नाद—गर्जन की तरह; गभीरया—गम्भीर।

भगवान् कृष्ण ने अपना फेंटा कसकर तथा अपने घुँघराले बालों को पीछे बाँधकर महावत से बादलों जैसी गम्भीर गर्जना में ये शब्द कहे।

तात्पर्य : स्पष्ट है कि कृष्ण लड़ने की तैयारी कर रहे थे। श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर के अनुसार भगवान् ने अपना अँगरखा उतार दिया, अपनी पेट्टी कसी और अपने बालों को पीछे बाँध लिया।

अम्बष्ठाम्बष्ठ मार्गं नौ देह्यपक्रम मा चिरम् ।
नो चेत्सकुञ्जरं त्वाद्य नयामि यमसादनम् ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

अम्बष्ठ अम्बष्ठ—रे महावत, रे महावत; मार्गम्—रास्ता; नौ—हम दोनों को; देहि—दो; अपक्रम—एक ओर हट जाओ; मा चिरम्—बिना देरी किये; न उ चेत्—यदि नहीं; स-कुञ्जरम्—हाथी समेत; त्व—तुमको; अद्य—आज; नयामि—भेज दूँगा; यम—मृत्यु के स्वामी, यमराज के; सादनम्—घर में।

[कृष्ण ने कहा] : रे महावत, रे महावत, तुरन्त एक ओर हो जा और हमें निकलने दे। यदि तू ऐसा नहीं करता तो आज ही मैं तुम्हारे हाथी समेत तुम्हें यमराज के धाम भेज दूँगा।

एवं निर्भर्त्सितोऽम्बष्ठः कुपितः कोपितं गजम् ।
चोदयामास कृष्णाय कालान्तकयमोपमम् ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

एवम्—इस प्रकार; निर्भर्त्सितः—धमकाया गया; अम्बष्ठः—महावत ने; कुपितः—क्रुद्ध; कोपितम्—कुपित हुए; गजम्—हाथी को; चोदयामास—अंकुश मारा; कृष्णाय—कृष्ण की ओर; काल—समय; अन्तक—मृत्यु; यम—तथा यमराज; उपमम्—के सदृश।

इस प्रकार धमकाये जाने पर महावत क्रुद्ध हो उठा। उसने अपने उग्र हाथी को अंकुश जमाई। वह आक्रमण करने वाले कृष्ण पर काल, मृत्यु तथा यमराज के समान प्रतीत हुआ।

करीन्द्रस्तमभिद्रुत्य करेण तरसाग्रहीत् ।
कराद्विगलितः सोऽमुं निहत्याङ्घ्रिष्वलीयत ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

करि—हाथियों के; इन्द्रः—स्वामी ने; तम्—उसको; अभिद्रुत्य—की ओर दौड़ते हुए; करेण—सूँड़ से; तरसा—वेग से; अग्रहीत्—पकड़ लिया; करात्—सूँड़ से; विगलितः—छटक कर; सः—वह, कृष्ण; अमुम्—उस कुवलयापीड को; निहत्य—प्रहार करके; अङ्घ्रिषु—उसके पाँवों के बीच; अलीयत—ओझल हो गया।

उस हस्तिराज ने कृष्ण पर आक्रमण कर दिया और अपनी सूँड़ से तेजी से उन्हें पकड़

लिया। किन्तु कृष्ण सरक गये, उस पर एक घूँसा जमाया और उसके पैरों के बीच जाकर उसकी दृष्टि से ओझल हो गये।

तात्पर्य : कृष्ण ने उस पर मुक्के से प्रहार किया और तब उसके पैरों के बीच में छिप गये।

सङ्क्रुद्धस्तमचक्षाणो घ्राणदृष्टिः स केशवम् ।

परामृशत्युष्करेण स प्रसह्य विनिर्गतः ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

सङ्क्रुद्धः—क्रुद्ध हुआ; तम्—उसको; अचक्षाणः—न देखकर; घ्राण—अपनी घ्राण-इन्द्रिय से; दृष्टिः—दृष्टि; सः—उस हाथी ने; केशवम्—भगवान् केशव को; परामृशत्—पकड़ लिया; पुष्करेण—अपने सूँड़ के अग्र भाग से; सः—कृष्ण; प्रसह्य—बलपूर्वक; विनिर्गतः—छूट गया।

भगवान् केशव को न देख पाने से क्रुद्ध हुए उस हाथी ने अपनी घ्राण-इन्द्रिय से उन्हें खोज निकाला। कुवलयापीड ने एक बार फिर भगवान् को अपनी सूँड़ के अग्र भाग से पकड़ा किन्तु उन्होंने बलपूर्वक अपने को छुड़ा लिया।

तात्पर्य : भगवान् कृष्ण ने हाथी को अपने को पकड़ने दिया जिससे वह उनसे लड़ता रहने के लिए प्रोत्साहित हो। एक बार जब कुवलयापीड इस तरह गर्वित हो उठा तो कृष्ण ने अपनी पराशक्ति से उसे फिर निष्फल बना दिया।

पुच्छे प्रगृह्यातिबलं धनुषः पञ्चविंशतिम् ।

विचकर्ष यथा नागं सुपर्ण इव लीलया ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

पुच्छे—उसकी पूँछ से; प्रगृह्य—पकड़कर; अति-बलम्—अत्यन्त शक्तिशाली (हाथी); धनुषः—धनुष के बराबर दूरी; पञ्च-विंशतिम्—पच्चीस; विचकर्ष—घसीटा; यथा—जिस तरह; नागम्—साँप को; सुपर्णः—गरुड़; इव—सदृश; लीलया—खेल खेल में।

तब भगवान् कृष्ण ने बलशाली कुवलयापीड को पूँछ से पकड़ा और खेल खेल में वे उसे पच्चीस धनुष-दूरी तक वैसे ही घसीट ले गये जिस तरह गरुड़ किसी साँप को घसीटता है।

स पर्यावर्तमानेन सव्यदक्षिणतोऽच्युतः ।

बभ्राम भ्राम्यमाणेन गोवत्सेनेव बालकः ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

सः—वह; पर्यावर्तमानेन—घुमाये जाते हाथी के साथ; सव्य-दक्षिणतः—कभी बाएँ तो कभी दाएँ; अच्युतः—भगवान् कृष्ण; बभ्राम—घूमने लगे; भ्राम्यमाणेन—घुमाये जाने वाले के साथ साथ; गो-वत्सेन—बछड़े सहित; इव—जिस तरह; बालकः—कोई बालक ।

जब भगवान् अच्युत ने हाथी की पूँछ पकड़ी तो वह बाएँ और फिर दाएँ घूमने का प्रयास करने लगा, जिससे भगवान् उल्टी दिशा में घूमने लगे जिस तरह कि कोई बालक किसी बछड़े की पूँछ खींचने पर घूमता है ।

ततोऽभिमखमभ्येत्य पाणिनाहत्य वारणम् ।
प्राद्रवन्पातयामास स्पृश्यमानः पदे पदे ॥ १० ॥

शब्दार्थ

ततः—तब; अभिमुखम्—समक्ष; अभ्येत्य—आकर; पाणिना—हाथ से; आहत्य—थप्पड़ लगाकर; वारणम्—हाथी को; प्राद्रवन्—भगते हुए; पातयाम् आस—गिरा दिया; स्पृश्यमानः—स्पर्श किया जाकर; पदे पदे—पग पग पर ।

तब कृष्ण उस हाथी के सामने आये और उसे चपत लगाकर भाग गये । कुवलयापीड उनका पीछा करने लगा, वह उन्हें प्रत्येक पग पर बारम्बार छूने का इस तरह का प्रयास करता किन्तु कृष्ण बचकर निकल जाते । उन्होंने उसे झाँसा देकर गिरा दिया ।

स धावन्कृईदया भूमौ पतित्वा सहसोत्थितः ।
तम्मत्वा पतितं क्रुद्धो दन्ताभ्यां सोऽहनत्क्षितिम् ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

सः—वह; धावन्—दौड़ते हुए; क्रीडया—खेल खेल में; भूमौ—भूमि पर; पतित्वा—गिरकर; सहसा—एकाएक; उत्थितः—उठकर; तम्—उसको; मत्वा—मानते हुए; पतितम्—गिरा हुआ; क्रुद्धः—क्रुद्ध; दन्ताभ्याम्—उसके दाँतों सहित; सः—वह, कुवलयापीड; अहनत्—टकराये; क्षितिम्—पृथ्वी पर ।

कृष्ण झुठलाते हुए खेल खेल में पृथ्वी पर गिर पड़ते और पुनः तेजी से उठ जाते । क्रुद्ध हाथी ने कृष्ण को गिरा समझकर उन पर अपने दाँत चुभोने चाहे किन्तु उल्टे वे दाँत धरती से जा टकराये ।

स्वविक्रमे प्रतिहते कुञ्जरेन्द्रोऽत्यमर्षितः ।
चोद्यमानो महामात्रैः कृष्णामभ्यद्रवद्रुषा ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

स्व—अपने; विक्रमे—पराक्रम में; प्रतिहते—असफल होने पर; कुञ्जर-इन्द्रः—हाथियों का राजा; अति—अत्यधिक; अमर्षितः—क्रोध से विचलित; चोद्यमानः—प्रेरित किया गया; महामात्रैः—महावत द्वारा; कृष्णाम्—कृष्ण पर; अभ्यद्रवत्—आक्रमण किया; रुषा—क्रोध से ।

जब हस्तिराज कुवलयापीड का पराक्रम व्यर्थ गया तो वह निराशा-जनित क्रोध से जलभुन

उठा। किन्तु महावत ने उसे अंकुश मारा और उसने पुनः एक बार कृष्ण पर क्रुद्ध होकर आक्रमण कर दिया।

तमापतन्तमासाद्य भगवान्मधुसूदनः ।
निगृह्य पाणिना हस्तं पातयामास भूतले ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

तम्—उसको; आपतन्तम्—आक्रमण करते; आसाद्य—सामना करके; भगवान्—भगवान्; मधु-सूदनः—मधु नामक असुर का वध करने वाले ने; निगृह्य—मजबूती से पकड़ कर; पाणिना—अपने हाथ से; हस्तम्—उसके सँड़ को; पातयाम् आस—गिरा दिया; भू-तले—पृथ्वी पर।

भगवान् मधुसूदन ने अपने ऊपर आक्रमण करते हुए हाथी का सामना किया। एक हाथ से उसकी सँड़ पकड़ कर कृष्ण ने उसे धरती पर पटक दिया।

पतितस्य पदाक्रम्य मृगेन्द्र इव लीलया ।
दन्तमुत्पाट्य तेनेभं हस्तिपांश्चाहनद्धरिः ॥ १४ ॥

शब्दार्थ

पतितस्य—गिरे हुए (हाथी) का; पदा—अपने पाँव से; आक्रम्य—चढ़कर; मृगेन्द्रः—सिंह; इव—सदृश; लीलया—सहज ही; दन्तम्—एक दाँत को; उत्पाट्य—उखाड़ कर; तेन—उसी से; इभम्—हाथी को; हस्ति-पान्—महावतों को; च—भी; अहनत्—मार डाला; हरिः—भगवान् कृष्ण ने।

तब भगवान् हरि शक्तिशाली सिंह के ही समान आसानी से हाथी के ऊपर चढ़ गये, उसका एक दाँत उखाड़ लिया और उसी से उस जानवर को तथा उसके महावतों को मार डाला।

मृतकं द्विपमुत्सृज्य दन्तपाणिः समाविशत् ।
अंसन्यस्तविषाणोऽसृङ्मदबिन्दुभिरङ्कितः ।
विरूढस्वेदकणिका वदनाम्बुरुहो बभौ ॥ १५ ॥

शब्दार्थ

मृतकम्—मृत; द्विपम्—हाथी को; उत्सृज्य—फेंक कर, छोड़ कर; दन्त—उसका दाँत; पाणिः—अपने हाथ में; समाविशत्—(अखाड़े में) घुसे; अंस—कंधे पर; न्यस्त—रखकर; विषाणः—दाँत; असृक्—रक्त की; मद—तथा हाथी के पसीने की; बिन्दुभिः—बूँदों से; अङ्कितः—छिड़की हुई; विरूढ—निकालते हुए; स्वेद—अपने पसीने की; कणिका—सूक्ष्म बूँदों से; वदन—मुख; अम्बु-रुहः—कमल जैसा; बभौ—चमक रहा था।

मरे हुए हाथी को वहीं छोड़कर भगवान् कृष्ण हाथी का दाँत लिये अखाड़े में प्रविष्ट हुए। अपने कंधे पर हाथी का दाँत रखे, उस हाथी के रक्त तथा पसीने के छींटे पड़े हुए शरीर और अपने ही पसीने की छोटी छोटी बूँदों से आच्छादित कमलमुख भगवान् परम सुशोभित लग रहे थे।

वृतौ गोपैः कतिपयैर्बलदेवजनार्दनौ ।
रङ्गं विविशतू राजनगजदन्तवरायुधौ ॥ १६ ॥

शब्दार्थ

वृतौ—घिरे हुए; गोपैः—ग्वालबालों से; कतिपयैः—अनेक; बलदेव-जनार्दनौ—बलराम तथा कृष्ण; रङ्गम्—अखाड़े में; विविशतुः—प्रविष्ट हुए; राजन्—हे राजन् (परीक्षित); गज-दन्त—हाथी के दाँतों; वर—चुने हुए; आयुधौ—हथियार वाले ।
हे राजन्, भगवान् बलदेव तथा भगवान् जनार्दन दोनों ही उस हाथी के एक एक दाँत को अपने चुने हुए हथियार के रूप में लिये हुए अनेक ग्वालबालों के साथ अखाड़े में प्रविष्ट हुए ।

मल्लानामशनिर्नृणां नरवरः स्त्रीणां स्मरो मूर्तिमान्
गोपानां स्वजनोऽसतां क्षितिभुजां शास्ता स्वपित्रोः शिशुः ।
मृत्युर्भोजपतेर्विराडविदुषां तत्त्वं परं योगिनां
वृष्णीनां परदेवतेति विदितो रङ्गं गतः साग्रजः ॥ १७ ॥

शब्दार्थ

मल्लानाम्—पहलवानों के लिए; अशनिः—वज्र; नृणाम्—पुरुषों के लिए; नर-वरः—श्रेष्ठ-पुरुष; स्त्रीणाम्—स्त्रियों के लिए; स्मरः—कामदेव; मूर्ति-मान्—अवतार; गोपानाम्—ग्वालों के लिए; स्व-जनः—उनके सम्बन्धी; असताम्—दुष्ट; क्षिति-भुजाम्—राजाओं के लिए; शास्ता—दण्ड देने वाला; स्व-पित्रोः—अपने माता-पिता के लिए; शिशुः—बालक; मृत्युः—मृत्यु; भोज-पतेः—भोजों के राजा कंस के लिए; विराट्—सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड; अविदुषाम्—मूर्खों के लिए; तत्त्वं—सत्य; परम्—परम; योगिनाम्—योगियों के लिए; वृष्णीनाम्—वृष्टिकुल के सदस्यों के लिए; पर-देवता—परम पूज्य देव; इति—इस तरह; विदितः—समझा; रङ्गम्—अखाड़े में; गतः—प्रविष्ट हुए; स—सहित; अग्र-जः—बड़े भाई ।

जब कृष्ण अपने बड़े भाई के साथ अखाड़े में प्रविष्ट हुए तो विभिन्न वर्गों के लोगों ने कृष्ण को भिन्न भिन्न रूपों में देखा । पहलवानों ने कृष्ण को वज्र के समान देखा, मथुरावासियों ने श्रेष्ठ-पुरुष के रूप में, स्त्रियों ने साक्षात् कामदेव के रूप में, ग्वालों ने अपने सम्बन्धी के रूप में, दुष्ट शासकों ने दण्ड देने वाले के रूप में, उनके माता-पिता ने अपने शिशु के रूप में, भोजराज ने मृत्यु के रूप में, मूर्खों ने भगवान् के विराट रूप में, योगियों ने परम ब्रह्म के रूप में तथा वृष्णियों ने अपने परम आराध्य देव के रूप में देखा ।

तात्पर्य : श्रील श्रीधर स्वामी ने निम्नलिखित श्लोक उद्धृत किया है, जिसमें कृष्ण के प्रति १० विभिन्न रसों की व्याख्या मिलती है—

रौद्रऽद्भुतश्च शृंगारो हास्यं वीरो दया तथा ।

भयानकश्च बीभत्सः शान्तः स-प्रेमभक्तिकः ॥

“ [दस विभिन्न रस हैं] : रौद्र (पहलवानों द्वारा अनुभूत), अद्भुत (पुरुषों द्वारा), शृंगार (स्त्रियों

द्वारा), हास्य (ग्वालों द्वारा), वीर (राजाओं द्वारा) दया (माता-पिता द्वारा), भय (कंस द्वारा), वीभत्स (मूर्खों द्वारा), शान्त (योगियों द्वारा) तथा प्रेमाभक्ति (वृष्णियों द्वारा)।”

श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती इंगित करते हैं कि पहलवानों, कंस तथा दुष्ट राजाओं जैसे व्यक्तियों ने कृष्ण को घातक, क्रुद्ध या धमकी देने वाले के रूप में देखा क्योंकि वे भगवान् के वास्तविक पद को समझ पाने में असमर्थ थे। वस्तुतः कृष्ण हरएक के मित्र तथा शुभचिन्तक हैं किन्तु वे हमें दण्ड देते हैं क्योंकि हम उनके विरुद्ध उत्पात करते हैं। इस तरह हम उन्हें दण्ड देने वाले के रूप में देख सकते हैं। कृष्ण अथवा ईश्वर तो वास्तव में दयालु हैं और जब वे हमें दण्ड देते हैं, तो वह भी उनकी कृपा होती है।

श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर ने निम्नलिखित वैदिक वाक्य उद्धृत किया है— *रसो वै सः रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति*—वे साक्षात् रस हैं—विशिष्ट सम्बन्ध का रस—और जो इस रस को प्राप्त कर लेता है, वह *आनन्दी* अर्थात् आनन्द से पूरित हो जाता है। (तैत्तिरीय उपनिषद् २.७.१)

रस शब्द की व्याख्या के लिए उन्होंने एक और श्लोक उद्धृत किया है—

व्यतीत्य भावनावर्त्म यश्चमत्कारभारभूः ।

हृदि सत्त्वोज्ज्वले बाढं स्वदते स रसो मतः ॥

“जो कल्पना से परे है, आश्चर्य से बोझिल है और जिसका सतोगुण से चमत्कृत हृदय में आस्वाद लिया जाता है, वह रस है।”

जैसाकि श्रील रूप गोस्वामी ने *भक्तिरसामृतसिन्धु* में विस्तार से विवेचना की है, मुख्य रस पाँच हैं—शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य तथा माधुर्य। गौण रस सात हैं—आश्चर्य, हास्य, वीर, दया, रौद्र, भयानक तथा वीभत्स। इस प्रकार कुल १२ रस हैं और इन सबका चरमलक्ष्य साक्षात् श्रीकृष्ण हैं। दूसरे शब्दों में, हमारा प्रेम तथा वात्सल्य वास्तव में कृष्ण के निमित्त होता है। दुर्भाग्यवश अपने अज्ञान के कारण जिद्द में आकर हम भौतिक सम्बन्धों से जो कृष्ण से जुड़े हुए नहीं हैं सुख तथा प्रेम प्राप्त करने का प्रयास करते हैं और इस तरह जीवन में निरन्तर हताशा आ जाती है। इसका सरल उपाय है कृष्ण की शरण में जाएँ, कृष्ण से प्रेम करें, कृष्ण-भक्तों से प्रेम करें और सदा के लिए सुखी बनें।

हतं कुवलयपीडं दृष्ट्वा तावपि दुर्जयौ ।
कंसो मनस्यपि तदा भृशमुद्विज्जे नृप ॥ १८ ॥

शब्दार्थ

हतम्—मारा गया; कुवलयपीडम्—कुवलयपीड हाथी को; दृष्ट्वा—देखकर; तौ—दोनों, कृष्ण तथा बलराम; अपि—तथा; दुर्जयौ—दुर्जय, न जीते जा सकने योग्य; कंसः—कंस ने; मनसि—अपने मन में; अपि—निस्सन्देह; तदा—तब; भृशम्—अत्यधिक; उद्विज्जे—उद्विग्न हो उठा; नृप—हे राजा (परीक्षित)।

जब कंस ने देखा कि कुवलयपीड मारा गया है और दोनों भाई अजेय हैं, तो हे राजन्, वह चिन्ता से उद्विग्न हो उठा।

तौ रेजतू रङ्गगतौ महाभुजौ
विचित्रवेषाभरणस्त्रगम्बरौ ।
यथा नटावुत्तमवेषधारिणौ
मनः क्षिपन्तौ प्रभया निरीक्षताम् ॥ १९ ॥

शब्दार्थ

तौ—दोनों; रेजतुः—चमक रहे थे; रङ्ग-गतौ—अखाड़े में उपस्थित; महा-भुजौ—विशाल भुजाओं वाले; विचित्र—नाना प्रकार का; वेष—वेशभूषा; आभरण—गहने; स्त्रक्—मालाएँ; अम्बरौ—तथा वस्त्र; यथा—जिस तरह; नटौ—दो अभिनेता; उत्तम—उत्तम; वेष—पोशाक; धारिणौ—धारण किये; मनः—मनों को; क्षिपन्तौ—प्रहार करते हुए; प्रभया—अपने तेज से; निरीक्षताम्—देखने वालों के।

नाना प्रकार के गहनों, मालाओं तथा वस्त्रों से सुसज्जित विशाल भुजाओं वाले वे दोनों (भगवान्) उत्तम वेश धारण किये अभिनेताओं की तरह अखाड़े में शोभायमान हो रहे थे। निस्सन्देह उन्होंने अपने तेज से समस्त देखने वालों के मन को अभिभूत कर लिया।

निरीक्ष्य तावुत्तमपूरुषौ जना
मञ्चस्थिता नागरराष्ट्रका नृप ।
प्रहर्षवेगोत्कलितेक्षणाननाः
पपुर्न तृप्ता नयनैस्तदाननम् ॥ २० ॥

शब्दार्थ

निरीक्ष्य—देखकर; तौ—दोनों; उत्तम-पूरुषौ—परम पुरुषों को; जनाः—लोग; मञ्च—दर्शक-दीर्घाओं में; स्थिताः—बैठे हुए; नागर—नगरनिवासी; राष्ट्रकाः—बाहरी जिलों के लोग; नृप—हे राजन्; प्रहर्ष—अपने हर्ष के; वेग—वेग से; उत्कलित—विस्तीर्ण हुई, फैली हुई; ईक्षण—आँखें; आननाः—मुख; पपुः—पिया; न—नहीं; तृप्ताः—तृप्त; नयनैः—आँखों से; तत्—उनके; आननम्—मुखों को।

हे राजन्, जब नगरवासियों तथा पास पड़ोस के जिलों से आये लोगों ने दीर्घाओं में बैठे अपने अपने स्थानों से दोनों परम पुरुषों को देखा तो प्रसन्नता रूपी शक्ति से उनकी आँखें खुली की खुली रह गई और उनके मुखमंडल खिल उठे। वे अतृप्त होकर उनके मुखों के दर्शन का पान

करते रहे।

पिबन्त इव चक्षुर्भ्यां लिहन्त इव जिह्वया ।

जिघ्रन्त इव नासाभ्यां श्लिष्यन्त इव बाहुभिः ॥ २१ ॥

ऊचुः परस्परं ते वै यथादृष्टं यथाश्रुतम् ।

तद्रूपगुणमाधुर्यप्रागल्भ्यस्मारिता इव ॥ २२ ॥

शब्दार्थ

पिबन्तः—पीते हुये; इव—मानो; चक्षुर्भ्याम्—आँखों से; लिहन्तः—चाटते हुए; इव—मानो; जिह्वया—अपनी अपनी जीभों से; जिघ्रन्तः—सूँघते हुए; इव—मानो; नासाभ्याम्—अपने नथुनों से; श्लिष्यन्तः—आलिंगन करते हुए; इव—मानो; बाहुभिः—अपनी बाहों से; ऊचुः—कहा; परस्परम्—एक-दूसरे से; ते—वे; वै—निस्सन्देह; यथा—जिस प्रकार; दृष्टम्—उन्होंने देखा था; यथा—जिस तरह; श्रुतम्—सुना था; तत्—उनके; रूप—सौन्दर्य; गुण—गुण; माधुर्य—माधुरी; प्रागल्भ्य—तथा बहादुरी; स्मारिताः—स्मरण कराया; इव—मानो।

ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो लोग अपनी आँखों से कृष्ण तथा बलराम का पान कर रहे हों, अपनी जीभों से उन्हें चाट रहे हों, अपने नथुनों से उन्हें ही सूँघ रहे हों तथा अपनी बाहों से उनका आलिंगन कर रहे हों। भगवान् के सौन्दर्य, चरित्र, माधुर्य तथा बहादुरी का स्मरण करके दर्शकगण देखे तथा सुने गये इन लक्षणों का वर्णन एक-दूसरे से करने लगे।

तात्पर्य : स्वाभाविक है कि जो लोग मल्ल-उत्सव देखने के लिए मथुरा में एकत्रित हुए थे उन्होंने नगर में कृष्ण तथा बलराम के कार्यकलापों की ताजी खबरें सुन रखी थीं—कि किस तरह उन दोनों ने यज्ञ-धनुष को तोड़ा था और किस तरह रक्षकों को हराकर कुवलयापीड हाथी का वध किया था। अब जबकि वे सभी कृष्ण तथा बलराम को अखाड़े में प्रवेश करते देख रहे थे तो उनकी महाती अपेक्षाओं की पुष्टि हो गई थी। कृष्ण समस्त सौन्दर्य, यश तथा ऐश्वर्य की साकार मूर्ति थे अतः अखाड़े में एकत्रित सारे लोगों ने उनके विषय में जो कुछ सुन रखा था और अब जो कुछ देख रहे थे उसका गुणगान करते हुए परम संतुष्ट हो रहे थे।

एतौ भगवतः साक्षाद्भरेनारायणस्य हि ।

अवतीर्णाविहांशेन वसुदेवस्य वेश्मनि ॥ २३ ॥

शब्दार्थ

एतौ—ये दोनों; भगवतः—भगवान्; साक्षात्—प्रत्यक्ष; हरेः—हरि का; नारायणस्य—नारायण का; हि—निश्चय ही; अवतीर्णा—अवतरित हुए हैं; इह—इस जगत में; अंशेन—अंश रूप में; वसुदेवस्य—वसुदेव के; वेश्मनि—घर में।

[लोगों ने कहा] ये दोनों बालक निश्चय ही भगवान् नारायण के अंश हैं, जो इस जगत में

वसुदेव के घर में अवतरित हुए हैं।

एष वै किल देवक्यां जातो नीतश्च गोकुलम् ।
कालमेतं वसन्गूढो ववृधे नन्दवेश्मनि ॥ २४ ॥

शब्दार्थ

एषः—यह (कृष्ण); वै—निश्चय ही; किल—निस्सन्देह; देवक्याम्—देवकी के गर्भ से; जातः—उत्पन्न; नीतः—लाया गया; च—तथा; गोकुलम्—गोकुल में; कालम्—समय तक; एतम्—इतना; वसन्—रहते हुए; गूढः—छिपा हुआ; ववृधे—बड़ा हुआ; नन्द-वेश्मनि—नन्द महाराज के घर में।

उन्होंने (कृष्ण ने) माता देवकी से जन्म लिया और गोकुल ले जाये गए जहाँ वे इतने समय

तक राजा नन्द के घर में छिपकर बढ़ते रहे।

पूतनानेन नीतान्तं चक्रवातश्च दानवः ।
अर्जुनौ गुह्यकः केशी धेनुकोऽन्ये च तद्विधाः ॥ २५ ॥

शब्दार्थ

पूतना—पूतना राक्षसी; अनेन—इसके द्वारा; नीता—लाया गया; अन्तम्—प्राणान्त; चक्रवातः—बवंडर; च—तथा; दानवः—असुर; अर्जुनौ—यमलार्जुन वृक्ष; गुह्यकः—शंखचूड़; केशी—घोड़ा असुर; धेनुकः—धेनुक असुर; अन्ये—अन्य; च—तथा; तत्-विधाः—उन्हीं की तरह।

इन्होंने पूतना तथा चक्रवात असुर का प्राणान्त कर दिया, यमलार्जुन वृक्षों को गिरा दिया

और शंखचूड़, केशी, धेनुक तथा ऐसे ही असुरों का वध कर दिया।

गावः सपाला एतेन दावाग्नेः परिमोचिताः ।
कालियो दमितः सर्प इन्द्रश्च विमदः कृतः ॥ २६ ॥
सप्ताहमेकहस्तेन धृतोऽद्रिप्रवरोऽमुना ।
वर्षवाताशनिभ्यश्च परित्रातं च गोकुलम् ॥ २७ ॥

शब्दार्थ

गावः—गौवें; स—सहित; पालाः—इनके पालक; एतेन—उसके द्वारा; दाव-अग्नेः—जंगल की आग से; परिमोचिताः—बचाये गये; कालियः—कालिय; दमितः—दमन किया गया; सर्पः—सर्प; इन्द्रः—इन्द्र; च—तथा; विमदः—गर्वरहित; कृतः—किया हुआ; सप्त-अहम्—सात दिनों तक; एक-हस्तेन—एक हाथ से; धृतः—धारण किये; अद्रि—पर्वत; प्रवरः—विख्यात; अमुना—इसके द्वारा; वर्ष—वर्षा; वात—हवा; अशनिभ्यः—तथा ओले से; च—भी; परित्रातम्—उद्धार किया; च—तथा; गोकुलम्—गोकुलवासियों को।

इन्होंने गौवों तथा ग्वालों को जंगल की आग से बचाया और कालिय सर्प का दमन किया।

इन्होंने अपने एक हाथ में सर्वश्रेष्ठ पर्वत को एक सप्ताह तक धारण किये रखकर इन्द्र देव के मिथ्या गर्व को चूर किया और इस तरह वर्षा, हवा तथा ओलों से गोकुलवासियों की रक्षा की।

गोप्योऽस्य नित्यमुदितहसितप्रेक्षणं मुखम् ।
पश्यन्त्यो विविधांस्तापांस्तरन्ति स्माश्रमं मुदा ॥ २८ ॥

शब्दार्थ

गोप्यः—युवा गोपियों ने; अस्य—इसके; नित्य—सदैव; मुदित—प्रसन्न; हसित—हँसी से पूर्ण; प्रेक्षणम्—चितवन को;
मुखम्—मुख को; पश्यन्त्यः—देखती हुई; विविधान्—अनेक प्रकार के; तापान्—कष्ट; तरन्ति स्म—पार कर लिया;
अश्रमम्—बिना थकान के; मुदा—प्रसन्नतापूर्वक ।

निरन्तर हँसीली चितवन से प्रसन्न तथा थकान से मुक्त इनके मुखमण्डल को निहार-निहार कर गोपियों ने समस्त प्रकार के कष्टों को पार कर लिया और परम सुख का अनुभव किया ।

वदन्त्यनेन वंशोऽयं यदोः सुबहुविश्रुतः ।
श्रियं यशो महत्त्वं च लप्स्यते परिरक्षितः ॥ २९ ॥

शब्दार्थ

वदन्ति—कहते हैं; अनेन—इसके द्वारा; वंशः—कुल; अयम्—यह; यदोः—राजा यदु के; सु-बहु—अत्यधिक; विश्रुतः—प्रसिद्ध; श्रियम्—धन; यशः—यश; महत्त्वम्—शक्ति; च—तथा; लप्स्यते—प्राप्त करेगा; परिरक्षितः—सभी प्रकार से रक्षित ।

कहा जाता है कि इनके संरक्षण में यदुकुल अत्यधिक विख्यात होगा और संपदा, यश तथा शक्ति अर्जित करेगा ।

अयं चास्याग्रजः श्रीमात्रामः कमललोचनः ।
प्रलम्बो निहतो येन वत्सको ये बकादयः ॥ ३० ॥

शब्दार्थ

अयम्—यह; च—तथा; अस्य—इसका; अग्र-जः—बड़ा भाई; श्री-मन्—समस्त ऐश्वर्य से युक्त; रामः—बलराम; कमल-लोचनः—कमल जैसे नेत्रों वाला; प्रलम्बः—प्रलम्बासुर; निहतः—मारे गये; येन—जिसके द्वारा; वत्सकः—वत्सासुर; ये—जो; बक—बकासुर; आदयः—इत्यादि ।

ये कमलनेत्रों वाले उनके ज्येष्ठ भाई भगवान् बलराम समस्त दिव्य ऐश्वर्यों के स्वामी हैं ।
इन्होंने प्रलम्ब, वत्सक, बक तथा अन्य असुरों का वध किया है ।

तात्पर्य : वस्तुतः यहाँ पर उल्लिखित असुरों में से दो का वध श्रीकृष्ण ने किया था, बलराम ने नहीं । इसका कारण यह है कि जब आम जनता में कृष्ण के कार्यों की खबर फैलने लगी तो तथ्य अस्पष्ट होने लगे । ऐसी ही प्रवृत्ति आधुनिक समाचार-माध्यमों में देखी जा सकती है ।

जनेष्वेवं ब्रुवाणेषु तूर्येषु निनदत्सु च ।
कृष्णरामौ समाभाष्य चाणूरो वाक्यमब्रवीत् ॥ ३१ ॥

शब्दार्थ

जनेषु—लोगों में; एवम्—इस तरह; ब्रुवाणेषु—बातें करते; तूर्येषु—तुरहियों के; निनदत्सु—निनाद करती हुई; च—तथा; कृष्ण-रामौ—कृष्ण तथा बलराम; समाभाष्य—सम्बोधित करके; चानूरः—चाणूर नामक पहलवान ने; वाक्यम्—शब्द; अब्रवीत्—कहे।

जिस समय लोग इस तरह बातें कर रहे थे और तुरहियाँ गूँजने लगीं थी तो पहलवान चाणूर ने कृष्ण तथा बलराम से ये शब्द कहे।

तात्पर्य : दर्शकों द्वारा कृष्ण की इतनी अधिक प्रशंसा चाणूर से सहन नहीं हुई अतः उसे दोनों भाइयों से कुछ कहना पड़ा।

हे नन्दसूनो हे राम भवन्तौ वीरसम्मतौ ।

नियुद्धकुशलौ श्रुत्वा राज्ञाहूतौ दिदृक्षुणा ॥ ३२ ॥

शब्दार्थ

हे नन्द-सूनो—अरे नन्द के पुत्र; हे राम—हे राम; भवन्तौ—तुम दोनों को; वीर—वीरों से; सम्मतौ—आदरित; नियुद्ध—कुशती में; कुशलौ—दक्ष; श्रुत्वा—सुनकर; राज्ञा—राजा द्वारा; आहूतौ—बुलाये गये; दिदृक्षुणा—देखने का इच्छुक।

[चाणूर ने कहा] : हे नन्दपुत्र, हे राम, तुम दोनों ही साहसी पुरुषों द्वारा समादरित हो और दोनों ही कुशती लड़ने में दक्ष हो। तुम्हारे पराक्रम को सुनकर राजा ने स्वतः देखने के उद्देश्य से तुम दोनों को यहाँ बुलाया है।

प्रियं राज्ञः प्रकुर्वत्यः श्रेयो विन्दन्ति वै प्रजाः ।

मनसा कर्मणा वाचा विपरीतमतोऽन्यथा ॥ ३३ ॥

शब्दार्थ

प्रियम्—प्रसन्नता; राज्ञः—राजा की; प्रकुर्वत्यः—सम्पन्न करते हुए; श्रेयः—सौभाग्य; विन्दन्ति—प्राप्त करते हैं; वै—निस्सन्देह; प्रजाः—लोग, जनता; मनसा—उनके मनों से; कर्मणा—उनके कर्मों से; वाचा—उनके शब्दों से; विपरीतम्—उल्टा; अतः—इसके; अन्यथा—अन्यथा।

जो प्रजा राजा को अपने विचारों, कर्मों तथा शब्दों से प्रसन्न रखने का प्रयास करती है उसे अवश्य ही सौभाग्य प्राप्त होता है किन्तु जो लोग ऐसा नहीं कर पाते उन्हें विपरीत भाग्य का सामना करना पड़ता है।

नित्यं प्रमुदिता गोपा वत्सपाला यथास्फुटम् ।

वनेषु मल्लयुद्धेन क्रीडन्तश्चारयन्ति गाः ॥ ३४ ॥

शब्दार्थ

नित्यम्—सदैव; प्रमुदिताः—अत्यन्त सुखी; गोपाः—ग्वाले; वत्सपालाः—बछड़े चराते; यथा-स्फुटम्—स्पष्टतः; वनेषु—जंगलों में; मल्ल-युद्धेन—कुशती से; क्रीडन्तः—खेलते हुए; चारयन्ति—चराते हैं; गाः—गौवें।

यह सर्वविदित है कि ग्वालों के बालक अपने बछड़ों को चराते हुए सदैव प्रमुदित रहते हैं और विविध जंगलों में अपने पशुओं को चराते हुए खेल खेल में कुशती लड़ते रहते हैं।

तात्पर्य : यहाँ चाणूर बतलाता है कि किस तरह दोनों भाई कुशती में दक्ष बने।

तस्माद्वाज्ञः प्रियं यूयं वयं च करवाम हे ।

भूतानि नः प्रसीदन्ति सर्वभूतमयो नृपः ॥ ३५ ॥

शब्दार्थ

तस्मात्—इसलिए; वाज्ञः—राजा की; प्रियम्—प्रसन्नता; यूयम्—तुम दोनों; वयम्—हम; च—भी; करवाम हे—करें; भूतानि—सारे जीव; नः—हमारे साथ; प्रसीदन्ति—प्रसन्न होंगे; सर्व-भूत—सारे जीवों से; मयः—युक्त; नृपः—राजा।

अतः जो राजा चाहता है हम वही करें। इससे हमारे साथ सारे लोग प्रसन्न होंगे, क्योंकि राजा सारे जीवों से समन्वित रूप होता है।

तन्निशम्याब्रवीत्कृष्णो देशकालोचितं वचः ।

नियुद्धमात्मनोऽभीष्टं मन्यमानोऽभिनन्द्य च ॥ ३६ ॥

शब्दार्थ

तत्—वह; निशम्य—सुनकर; अब्रवीत्—बोले; कृष्णः—कृष्ण; देश—स्थान; काल—तथा समय के; उचितम्—उपयुक्त; वचः—शब्द; नियुद्धम्—कुशती; आत्मनः—अपना; अभीष्टम्—वाञ्छित; मन्यमानः—विचार करते हुए; अभिनन्द्य—स्वागत करते हुए; च—तथा।

यह सुनकर भगवान् कृष्ण ने, जो कि कुशती लड़ना चाहते थे और इस चुनौती का स्वागत कर रहे थे, समय तथा स्थान के अनुसार यह बात कही।

प्रजा भोजपतेरस्य वयं चापि वनेचराः ।

करवाम प्रियं नित्यं तन्नः परमनुग्रहः ॥ ३७ ॥

शब्दार्थ

प्रजाः—जनता; भोज-पतेः—भोजों के राजा के; अस्य—इस; वयम्—हम; च—भी; अपि—होते हुए; वने-चराः—जंगल में घूमते हुए; करवाम—हमें करना चाहिए; प्रियम्—उसकी प्रसन्नता; नित्यम्—सदैव; तत्—वह; नः—हमारे लिए; परम्—सर्वाधिक; अनुग्रहः—लाभ।

[भगवान् कृष्ण ने कहा] : यद्यपि हम वनवासी हैं किन्तु हम भी भोजराज की प्रजा हैं। हमें उनकी इच्छा पूरी करनी चाहिए, क्योंकि ऐसे व्यवहार से हमें अत्यधिक लाभ होगा।

बाला वयं तुल्यबलैः क्रीडिष्यामो यथोचितम् ।
भवेन्नियुद्धं माधर्मः स्पृशेन्मल्लसभासदः ॥ ३८ ॥

शब्दार्थ

बालाः—बालक; वयम्—हम; तुल्य—समान; बलैः—बल वालों के साथ; क्रीडिष्यामः—खेलेंगे; यथा उचितम्—उपयुक्त ढंग से; भवेत्—होना चाहिए; नियुद्धम्—कुशती प्रतियोगिता; मा—नहीं; अधर्मः—अधर्म; स्पृशेत्—चाहिए; मल्ल-सभा—अखाड़े के; सदः—सदस्य ।

हम तो निरे बालक ठहरें और हमें समान बल वालों के साथ खेलना चाहिए। इस कुशती प्रतियोगिता को उचित ढंग से चलना चाहिए जिससे सम्माननीय दर्शक वर्ग को किसी प्रकार से अधर्म का कलंक न लगे ।

चाणूर उवाच

न बालो न किशोरस्त्वं बलश्च बलिनां वरः ।
लीलयेभो हतो येन सहस्रद्विपसत्त्वभृत् ॥ ३९ ॥

शब्दार्थ

चाणूरः उवाच—चाणूर ने कहा; न—नहीं; बालः—बालक; न—न तो; किशोरः—किशोर; त्वम्—तुम; बलः—बलराम; च—तथा; बलिनाम्—बलशालियों में; वरः—सर्वश्रेष्ठ; लीलया—खेल खेल में; इभः—हाथी; हतः—मारा गया; येन—जिसके द्वारा; सहस्र—एक हजार; द्विप—हाथियों के; सत्त्व—बल का; भृत्—वाहक ।

चाणूर ने कहा : वास्तव में तुम न ही बलशालियों में सर्वश्रेष्ठ बलराम, न तो बालक हो, न ही किशोर हो । तुमने खेल खेल में एक हाथी को मारा है, जिसमें एक हजार अन्य हाथियों का बल था ।

तस्माद्भवद्भ्यां बलिभिर्योद्धव्यं नानयोऽत्र वै ।
मयि विक्रम वाष्ण्य बलेन सह मुष्टिकः ॥ ४० ॥

शब्दार्थ

तस्मात्—अतएव; भवद्भ्याम्—तुम दोनों; बलिभिः—बलशालियों से; योद्धव्यम्—लड़ना चाहिए; न—नहीं है; अनयः—अनीति; अत्र—इसमें; वै—निश्चय ही; मयि—मुझमें; विक्रम—अपना पराक्रम; वाष्ण्य—हे वृष्णि-वंशी; बलेन सह—बलराम के साथ; मुष्टिकः—मुष्टिक (लड़ेगा) ।

अतः तुम दोनों को बलशाली पहलवानों से लड़ना चाहिए । इसमें निश्चय ही कुछ भी अनीति नहीं है । हे वृष्णि-वंशी, तुम अपना पराक्रम मुझ पर आजमा सकते हो और बलराम मुष्टिक के साथ लड़ सकता है ।

इस तरह श्रीमद्भागवत के दसवें स्कंध के अन्तर्गत “कृष्ण द्वारा कुवलयपीड का वध” नामक तैत्तलिसर्वे अध्याय के श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद के विनीत सेवकों द्वारा रचित तात्पर्य पूर्ण हुए